पंजीकरण हेतु आमंत्रण

विरासत-पर्यटन प्रबंधन प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

(पाँच-दिवसीय पर्यटन-प्रबंधन विकास कार्यक्रम)

नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर द्वारा
पर्यटन विभाग, बिहार सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

कार्यक्रम के संदर्भ में

भारतीय सभ्यता के इतिहास में बिहार का विशिष्ट स्थान है। सहस्राब्दियों से यह बौद्धिक अन्वेषण, सांस्कृतिक सृजनशीलता एवं सामाजिक रूपांतरण के अग्रणी केंद्रों में से एक रहा है, जिसने ऐसे विचारों, संस्थाओं, दर्शनों, अनुष्ठानों एवं परंपराओं को जन्म दिया। बिहार ने भारत एवं एशिया के सांस्कृतिक तथा बौद्धिक इतिहास को गहन रूप से आकार प्रदान किया। इसी ऐतिहासिक भूमि से बौद्ध एवं जैन धर्म का उद्भव हुआ, साम्राज्यगत राज्यसत्ताओं का उदय हुआ तथा विख्यात शिक्षण-केंद्रों ने विश्व भर के विद्वानों, भिक्षुओं, तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों को आकर्षित किया।

बिहार के सांस्कृतिक धरोहर वाले स्थलों में नालंदा, राजगीर और बोधगया सबसे प्रसिद्ध हैं, जो समग्र रूप से प्राचीन मगध क्षेत्र को सांस्कृतिक केंद्र बनाते हैं, जो आज भी दुनिया भर से आने वाले पर्यटकों, तीर्थयात्रियों, शोधकर्ताओं तथा छात्रों को आकर्षित करते हैं। शताब्दियों तक समस्त एशिया एवं विश्व भर से तीर्थयात्री तथा विद्वान, तीर्थाटन एवं आध्यात्मिक पूर्णता की खोज में इस पावन भूमि पर आते रहें, जिसने बिहार को सभ्यतागत आदान-प्रदान एवं सांस्कृतिक संवाद का संगम-स्थल बना दिया।

इस क्षेत्र का परिदृश्य भौतिक एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत दोनों ही दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध है। बड़ी संख्या में प्राचीन मठ, मंदिर, स्तूप, किले, शिलालेख, मूर्तियाँ, पुरातात्विक टीले, पवित्र पहाड़, गुफाएँ, जलाशय और ऐतिहासिक मार्ग आदि इस क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास का अविरल स्वरूप गढ़ते हैं। प्राचीन परंपराओं का अस्तित्व, स्थानीय समुदायिक उत्सव, मेले, तीर्थयात्राओं, प्रथाओं, मौखिक कथाओं, संगीत, प्रदर्शन-कला, शिल्प और मगध की जीवंत लोक संस्कृति इसे विशेष बनाते हैं। पारंपरिक उत्पाद जैसे प्रसिद्ध 'सिलाव खाजा' एवं 'नेपुरा 52-बूटी साड़ी' इसे भौगोलिक पहचान (GI) प्रदान करती है, साथ ही स्थानीय बुनाई परंपराएँ, ग्रामीण शिल्प और मौसमी मेले, इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान एवं पर्यटन क्षमता को निरंतर समृद्ध करते हैं।।

बिहार को एक वैश्विक धरोहर स्थल के रूप में मान्यता मिलने के कारण व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित पर्यटन कर्मियों की माँग बढ़ गई है, जो इसके धरोहर की व्याख्या ऐतिहासिक सटीकता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और आधुनिक प्रबंधन कौशल के साथ करने में सक्षम हों। आज की विरासत पर्यटन को केवल साइट से संबंधित जानकारी देने से कहीं अधिक उसकी समुचित व्याख्या, प्रभावी संचार, पर्यटन सहभागिता, जिम्मेदार पर्यटन परंपराओं और इस क्षेत्र की प्राकृतिक, सांस्कृतिक और जीवंत विरासत के संबर्द्धन तथा संरक्षण की माँग करता है।

इस संदर्भ में नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर □□ □□□□□□ पर्यटन विभाग, बिहार सरकार के संयुक्त तत्वावधान में पाँच-दिवसीय प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी): पर प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम का आयोजन

किया जा रहा है। यह कार्यक्रम मुख्यतः नालंदा-राजगीर-गया-बोधगया धरोहर परिपथ में कार्यरत पर्यटक पथप्रदर्शकों (गाइड) एवं टूर संचालकों के लिए अभिकल्पित है, साथ ही यह धरोहर एवं पर्यटन क्षेत्रों से जुड़े पर्यटन पेशेवरों, आतिथ्य व्यवसायियों, संग्रहालय कार्मिकों, धरोहर प्रबंधकों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, उद्यमियों तथा अन्य हितधारकों का भी स्वागत करता है।

यह कार्यक्रम विरासत अध्ययन, पर्यटन प्रबंधन, विरासत व्याख्या, कथा-वाचन, संप्रेषण, संरक्षण एवं क्षेत्र-आधारित अधिगम को समेकित करता है। इसका उद्देश्य पर्यटन मार्गदर्शकों की एक नई पीढ़ी विकसित करना है, जो बिहार की असाधारण सांस्कृतिक विरासत की उत्तरदायी ढंग से व्याख्या, संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन हेतु अपेक्षित विद्वत्तापूर्ण समझ, व्यावहारिक कौशल एवं व्यावसायिक दक्षता से सुसज्जित हो, साथ ही सतत पर्यटन विकास एवं क्षेत्र की जीवंत सभ्यतागत विरासत के संरक्षण में योगदान दें।

पाठ्यक्रम विवरण

कार्यक्रम कक्षा में शिक्षा को केस-स्टडी विश्लेषण, प्रमुख विरासत स्थलों के भ्रमण, प्रस्तुति-कला और संचार कार्यशालाओं, भूमिका-अभिनय अभ्यास, फोटोग्राफी यात्रा और डॉक्यूमेंट्री फिल्म स्क्रीनिंग के साथ जोड़ता है। □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□, □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□–□□□ □□□□□□□–□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ । प्रमुख विवरण निम्नानुसार हैं:

- **उद्घाटन–सत्र एवं कार्यक्रम का परिचय**
- **मॉड्यूल** I – **इतिहास एवं धरोहर**
- **मॉड्यूल** II – **पर्यटन प्रबंधन एवं विपणन**
- **मॉड्यूल** III – **संप्रेषण एवं भाषा**
- **गहन एवं अनुभवात्मक अधिगम – क्षेत्र भ्रमण**, **निर्देशित यात्राएँ एवं फिल्म प्रदर्शन**
- **समापन समारोह एवं प्रमाण-पत्र वितरण**

पात्रता एवं प्रतिभागिता की शर्तें:

यह कार्यक्रम आवेदकों के एक व्यापक वर्ग के लिए खुला है| जैसे- पर्यटक पथप्रदर्शक (टूर गाइड), पर्यटन संचालक, होमस्टे प्रबंधक, पर्यटन पेशेवर इत्यादि। कार्यक्रम में प्रतिभागिता हेतु न्यूनतम पात्रता निम्नलिखित है-

आवेदकों को निम्नलिखित में से एक अथवा अधिक मानदंडों को पूर्ण करना चाहिए:

- पर्यटन, आतिथ्य, विरासत, पुरातत्व, संग्रहालय, संस्कृति अथवा संबद्ध क्षेत्रों में वर्तमान में संबद्ध हों।
- निम्नलिखित में से किसी पर्यटन विभाग, बिहार सरकार; इंडिया टूरिज़्म (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार) अथवा किसी अन्य मान्यता प्राप्त पर्यटन प्रत्यायन, प्रमाणन अथवा व्यावसायिक निकाय द्वारा पंजीकृत अथवा मान्यता प्राप्त हों।
- जहाँ लागू हो, किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी वैध पर्यटक गाइड, धरोहर गाइड अथवा पर्यटन संचालक प्रमाणन धारण करते हों।

- किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड अथवा संस्थान से 10+2 अथवा समकक्ष की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता धारण करते हों। किसी भी विषय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर उम्मीदवारों को आवेदन हेतु विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाता है।
- विरासत व्याख्या, सांस्कृतिक पर्यटन, आगंतुक प्रबंधन अथवा सतत पर्यटन प्रथाओं में गहन रुचि रखते हों। (वांछनीय)

उन आवेदकों को वरीयता दी जा सकती है, जो नालंदा-राजगीर-गया-बोधगया धरोहर परिपथ के भीतर पथप्रदर्शन, धरोहर व्याख्या, गंतव्य प्रबंधन अथवा पर्यटन सेवाओं में सक्रिय रूप से संलग्न हैं; जबकि अन्य क्षेत्रों एवं संबद्ध क्षेत्रों से प्राप्त आवेदन भी सीटों की उपलब्धता के अधीन सादर आमंत्रित हैं।

शुल्क एवं भुगतान

- विश्वविद्यालय के अनिवासी विद्यार्थियों एवं आंतरिक प्रतिभागियों से कोई **पाठ्यक्रम शुल्क नहीं** लिया जाएगा।
- **पाठ्यक्रम शुल्क: ₹2,500/- (केवल दो हज़ार पाँच सौ रुपये) प्रति प्रतिभागी** - उन प्रतिभागियों के लिए जो परिसर में आवास एवं निवास सुविधाओं का विकल्प चुनते हैं, जिसमें कार्यक्रम की संपूर्ण अवधि हेतु भोजन एवं आवास सम्मिलित है। प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम हेतु पंजीकरण करते समय फॉर्म में इसका उल्लेख करना आवश्यक है।
- चयन की पुष्टि होने पर शुल्क देय होगा। भुगतान की विधि का विवरण चयनित प्रतिभागियों को उनके पंजीकरण की पुष्टि के साथ सूचित किया जाएगा।

उपस्थिति एवं प्रमाणन

प्रमाणन सक्रिय सहभागिता पर निर्भर है। जो प्रतिभागी निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूर्ण करेंगे, उन्हें नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा समापन प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा:

- सभी निर्धारित सत्रों में 100% उपस्थिति अनिवार्य है;
- कार्यक्रम के अंत में बहुविकल्पीय प्रश्नों (MCQ) के माध्यम से आकलन एवं मूल्यांकन;
- कार्यक्रम के अंत में प्रतिक्रिया (फीडबैक) फॉर्म का भरा जाना।

समापन प्रमाण-पत्र नालंदा विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति द्वारा कार्यक्रम के अंतिम दिन आयोजित होने वाले समापन समारोह में प्रदान किया जाएगा।

पंजीकरण कैसे करें

इच्छुक उम्मीदवार दिए गए लिंक पर क्लिक करके स्वयं को पंजीकृत कर सकते हैं:

https://forms.gle/NGpGAPpiDbxu7uhq5

महत्वपूर्ण तिथियाँ

- **पंजीकरण की अंतिम तिथि:** 24 **जुलाई** 2026
- **कार्यक्रम की तिथियाँ:** 25–29 **जुलाई** 2026 (**पाँच दिवस**)
- **समापन समारोह एवं प्रमाणन:** 29 **जुलाई** 2026

संपर्क

नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर।

नालंदा विश्वविद्यालय